

श्री जिनवर सेवा से क्षय मोहादि विपत्ति ।
हे जिन! श्री लिख पाऊँगा निज-गुण सम्पत्ति ॥
(थाली की चौकी पर केशर से श्री लिखें)

(दोहा)

अन्तर्मुख मुद्रा सहित, शोभित श्री जिनराज ।
प्रतिमा प्रक्षालन करूँ, धरूँ पीठ यह आज ॥
ॐ ह्रीं श्री पीठस्थापनं करोमि ।
(प्रक्षाल हेतु थाली स्थापित करें)

(रोला)

भक्ति रत्न से जड़ित आज मंगल सिंहासन ।
भेद-ज्ञान जल से क्षालित भावों का आसन ॥
स्वागत है जिनराज! तुम्हारा सिंहासन पर ।
हे जिनदेव पधारो श्रद्धा के आसन पर ॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मतीर्थाधिनाथ भगवन्निह सिंहासने तिष्ठ तिष्ठ ।
(थाली में जिनबिम्ब विराजमान करें)

क्षीरोदधि के जल से भरे कलश ले आया ।
दृग-सुख-वीरज ज्ञानस्वरूपी आतम पाया ॥
मंगल कलश विराजित करता हूँ जिनराजा ।
परिणामों के प्रक्षालन से सुधरे काजा ॥
ॐ ह्रीं अर्ह कलशस्थापनं करोमि ।

(चारों कोनों में निर्मल जल से भरे कलश स्थापित करें)

जल-फल आठों द्रव्य मिलाकर अर्घ्य बनाया ।
अष्ट अंग युत मानो सम्यग्दर्शन पाया ॥
श्री जिनवर के चरणों में यह अर्घ्य समर्पित ।
करूँ आज रागादि विकारी भाव विसर्जित ॥
ॐ ह्रीं श्री स्नपनपीठस्थिताय जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
(पीठ स्थित जिनप्रतिमा को अर्घ्य चढ़ायें)

मैं रागादि विभावों से कलुषित हे जिनवर ।
और आप परिपूर्ण वीतरागी हो प्रभुवर ॥
कैसे हो प्रक्षाल, जगत के अघ-क्षालक का ।
क्या दरिद्र होगा पालक? त्रिभुवन पालक का ॥

भक्ति भाव के निर्मल जल से अघ-मल धोता ।
 है किसका अभिषेक भ्रान्त चित खाता गोता ॥
 नाथ! भक्तिवश जिन बिम्बों का करूँ न्हवन मैं ।
 आज करूँ साक्षात् जिनेश्वर का पर्शन मैं ॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसन्तं वृषभादिमहावीरपर्यन्तं चतुर्विंशतितीर्थकर-
 परमदेवमाद्यानामाद्यो जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे.....नाम्निनगरे मासानामुत्तमे
मासे.....पक्षे.....दिने मुन्यार्यिकाश्रावकश्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं पवित्रतर-
 जलेन जिनमभिषेचयामि ।

(चारों कलशों से अभिषेक करें तथा वादित्र नाद करायेँ एवं जय-जय शब्दोच्चारण करें)
 (दोहा)

क्षीरोदधि-सम नीर से, करूँ बिम्ब प्रक्षाल ।
 श्री जिनवर की भक्ति से, जानूँ निज पर चाल ॥
 तीर्थकर का न्हवन शुभ, सुरपति करें महान ।
 पंचमेरु भी हो गये, महातीर्थ सुखदान ॥
 करता हूँ शुभ भाव से, प्रतिमा का अभिषेक ।
 बचूँ शुभाशुभ भाव से, यही कामना एक ॥
 जल-फलादि वसु द्रव्य ले, मैं पूजूँ जिनराज ।
 हुआ बिम्ब अभिषेक अब, पाऊँ निज पदराज ॥
 ॐ ह्रीं अभिषेकान्ते वृषभादिवीरान्तेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
 श्री जिनवर का धवल यश, त्रिभुवन में है व्याप्त ।
 शान्ति करें मम चित्त में, हे परमेश्वर आप्त ॥

(पुष्पाञ्जलि क्षेपण करें)

(रोला)

जिन प्रतिमा पर अमृतसम जल-कण अति शोभित ।
 आत्म-गगन में गुण अनन्त तारे भवि मोहित ॥
 हो अभेद का लक्ष्य भेद का करता वर्जन ।
 शुद्ध वस्त्र से जल-कण का करता परिमार्जन ॥

(प्रतिमा को शुद्ध वस्त्र से पोंछे)

(दोहा)

श्री जिनवर की भक्ति से, दूर होय भव-भार ।
 उर-सिंहासन थापिये, प्रिय चैतन्य कुमार ॥

(जिनप्रतिमा को सिंहासन पर विराजमान करें तथा निम्न छन्द बोलकर अर्घ्य चढ़ायें।)

जल-गन्धादिक द्रव्य से, पूजूँ श्री जिनराज ।
 पूर्ण अर्घ्य अर्पित करूँ, पाऊँ चेतनराज ॥
 ॐ ह्रीं श्री पीठस्थितजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(दोहा)

जिन संस्पर्शित नीर यह, गन्धोदक गुण खान ।
 मस्तक पर धारूँ सदा, बनूँ स्वयं भगवान ॥
 (मस्तक पर गन्धोदक चढ़ायें। अन्य किसी अंग से गन्धोदक का स्पर्श वर्जित है।)

विनय पाठ

(डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल कृत)

(दोहा)

अरहंतों को नमन कर नमूँ सिद्ध भगवान ।
 आचारज उवझाय अर सर्व साधु गुणखान ॥ १ ॥
 मोक्ष मोक्ष के मार्ग में विद्यमान जो जीव ।
 यथायोग्य नम कर प्रभो वन्दन करूँ सदीव ॥ २ ॥
 चौबीसों जिनराज की दिव्यध्वनि अनुसार ।
 ज्ञानिजनों ने जो लिखी वाणी विविधप्रकार ॥ ३ ॥
 नय-प्रमाण से विविधविध कही तत्त्व की बात ।
 भविकजनों के लिये जो एकमात्र आधार ॥ ४ ॥
 सब द्रव्यों के सभी गुण अर सामान्य-विशेष ।
 आज सभी को सहज ही हैं उपलब्ध अशेष ॥ ५ ॥
 जिनवाणी उपलब्ध है उसे बतावनहार ।
 बहुत अधिक दुर्लभ नहीं उसके जाननहार ॥ ६ ॥
 मोहनींद में जो पड़े नहीं कोई आधार ।
 साधर्मीजन कम नहीं उन्हें जगावनहार ॥ ७ ॥
 सारा जग बेचेत है मोहनींद के द्वार ।
 किन्तु हमें उपलब्ध हैं मार्ग बतावनहार ॥ ८ ॥